

पाठ की समीक्षा

पाठ 1 की समीक्षा

(1) आराधना क्या है?

- आराधना आदर-सूचक समर्पण है (प्रकाशितवाक्य 4:10-11)।
- आराधना सेवा है (रोमियों 12:1)।
- आराधना स्तुति है (भजन संहिता)।
- आराधना संगति है (प्रेरितों 2:42)।
- आराधना में सम्पूर्ण जीवन शामिल होता है (याकूब 1:26-27)।

(2) आराधना क्यों आवश्यक है?

- हम आराधना में परमेश्वर को देखते हैं (यशायाह 6:1-8)।
- आराधना में हम स्वयं को देखते हैं और रूपांतरित हो जाते हैं (यशायाह 6:1-8)।
- हम आराधना में हमारे संसार को देखते हैं (यशायाह 6:1-8)।
- आराधना में विफलता हमें परमेश्वर से अलग कर देती है (रोमियों 1:18-25)।

(3) आराधना में तीन लक्ष्य:

- आराधना में हम परमेश्वर से भेंट करते हैं।
- आराधना में हम मसीही चरित्र को तैयार करते हैं।
- आराधना में हम मसीही समाज का निर्माण करते हैं।

(4) किस प्रकार की आराधना परमेश्वर को ग्रहणयोग्य है?

- ग्रहणयोग्य आराधना परमेश्वर पर केंद्रित होती है (प्रकाशितवाक्य 4)।
- ग्रहणयोग्य आराधना परमेश्वर को वह महिमा देती है जिसके वह योग्य है (भजन संहिता 96:7-8)।
- ग्रहणयोग्य आराधना आत्मा और सच्चाई से की गई आराधना होती है (यूहन्ना 4:23-24)।

पाठ 2 की समीक्षा

(1) परमेश्वर के विषय में हमारी समझ आराधना के लिए ज़रूरी है क्योंकि परमेश्वर की विकृत छवि विकृत आराधना की ओर ले जाएगी।

(2) आराधना परमेश्वर पर केंद्रित होनी चाहिए, न कि हमारी आराधना अनुभव की गुणवत्ता पर।

(3) प्रकाशितवाक्य की पुस्तक स्वर्गीय आराधना का एक चित्र प्रस्तुत करती है:

- स्वर्गीय आराधना उस सृष्टिकर्ता की आराधना है जो सर्वोच्च, पवित्र और अनन्त है।
- स्वर्गीय आराधना उद्धारकर्ता की आराधना है।
- स्वर्गीय आराधना राजा की आराधना है।
- स्वर्गीय आराधना विजयी दूल्हे की आराधना है।

(4) भजन संहिता 15 एक आराधना भजन है जो आराधकों के लिए परमेश्वर की आवश्यकताओं का सारांश प्रस्तुत करता है। एक सच्चा आराधक:

- ईश्वरीय भय को जानता है।
- विनम्रता से आराधना करता है।
- परमेश्वर के अनुग्रह का जश्न मनाता है।
- ईश्वरीय जीवन व्यतीत करता है।
- समाज के साथ सही सम्बन्ध में रहता है।
- परमेश्वर की सुरक्षा और आशीष का वादा प्राप्त करता है।

पाठ 3 की समीक्षा

(1) परमेश्वर को इस बात की परवाह है कि हम किस प्रकार आराधना करते हैं क्योंकि:

- हमारी आराधना का स्वरूप परमेश्वर के बारे में हमारी समझ को प्रभावित करता है।
- हमारी आराधना का स्वरूप दर्शाता है कि हम आराधना क्यों करते हैं।

(2) आराधना एक सम्बन्ध है - परमेश्वर के साथ चलना

- परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए आराधना के साधन उपलब्ध कराए।
- परमेश्वर ने अब्राहम के लिए आराधना संभव बनाने की पहल की।
- परमेश्वर के अनुग्रह ने याकूब के लिए आराधना संभव बनाई।
- जब हम परमेश्वर के साथ चलते हैं, तो हमारे जीवन बदल जाते हैं।

(3) आराधना आज्ञाकारिता से आरम्भ होती है।

- आराधना भावना या अनुभूति से कहीं बढ़कर है।
- आराधना परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति एक सक्रिय प्रतिक्रिया है।
- परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता उसके साथ हमारे सम्बन्ध को गहरा करती है।

(4) आराधना में क्रियापद्धति (पुराने नियम के बलिदान) शामिल है।

- बलिदान परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण को दर्शाते थे। (रोमियों 12:1)
- परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति से सच्ची आराधना को सम्मानित किया। (2 इतिहास 5)
- सार्वजनिक क्रियापद्धति एक आज्ञाकारी हृदय से होनी चाहिए।

(5) आराधना में स्तुति शामिल होती है (भजन संहिता)।

- भजन संहिता पुस्तक दर्शाती है कि आराधना में स्तुति भी शामिल है।
- भजन संहिता पुस्तक दर्शाती है कि आराधना में विलाप भी शामिल है।

(6) आराधना में घोषणा (नबी) शामिल है।

- आराधना केवल प्रशंसा से कहीं अधिक है; यह सत्य की घोषणा भी है। संदेश देना ही आराधना है।
- भविष्यद्वक्ताओं ने सिखाया कि वास्तविकता के बिना क्रियापद्धति आराधना नहीं है।
- भविष्यद्वक्ताओं ने सिखाया कि सच्ची आराधना के लिए हमारे सर्वोत्तम प्रयास की आवश्यकता होती है।
- भविष्यद्वक्ताओं ने सिखाया कि सच्ची आराधना में सम्पूर्ण जीवन शामिल होता है।

पाठ 4 की समीक्षा

(1) सुसमाचारों में, यीशु पिता की आराधना करते हैं और स्वयं उनकी आराधना परमेश्वर के रूप में की जाती है।

- यीशु ने आराधना के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया।
- यीशु ने झूठी आराधना के प्रलोभन का इनकार किया।
- यीशु ने प्रार्थना के महत्व का आदर्श प्रस्तुत किया।
- यीशु की आराधना अनंत काल तक की जाएगी।

(2) प्रेरितों के काम की पुस्तक आराधना और सुसमाचार प्रचार के बीच संबंध को दर्शाती है।

- सच्ची आराधना सुसमाचार प्रचार को प्रेरित करती है
- प्रभावशाली सुसमाचार प्रचार आराधकों को जन्म देता है
- जो आराधना सुसमाचार प्रचार की ओर नहीं ले जाती वह आत्म-केन्द्रित हो जाएगी।

(3) पत्रियाँ आरम्भिक चर्च में आराधना के महत्वपूर्ण तत्वों को दर्शाती हैं। प्रारंभिक कलीसिया में आराधना में शामिल थे:

- बाइबल पठन
- परमेश्वर के वचन का प्रचार
- सार्वजनिक प्रार्थना
- भजन गाना
- भेंट/दान देना
- बपतिस्मा
- प्रभु भोज

(4) प्रकाशितवाक्य की पुस्तक दर्शाती है कि आराधना परमेश्वर की स्तुति करना है।

- आराधना से आराधक को आशीष मिलती है, परन्तु यह आराधना का प्राथमिक उद्देश्य नहीं है।
- आराधना का प्राथमिक उद्देश्य परमेश्वर का आदर करना है।
- स्वर्गीय आराधना हमें याद दिलाती है कि जो संसार हम देखते हैं वह पूर्ण वास्तविकता नहीं है।

पाठ 5 की समीक्षा

(1) आरम्भिक कलीसिया में:

- आराधना अनौपचारिक और घनिष्ठ थी।
- आराधना में आम लोगों की भागीदारी पर ज़ोर दिया गया।
- आराधना में जीवन का हर पहलू शामिल था।

(2) मध्य युग की आराधना में:

- आत्मिकता की तुलना में सुंदरता को अधिक महत्व दिया गया।
- लोग सभाओं को समझ नहीं पाते थे।
- कलीसिया केवल मूक-दर्शक थी, सक्रिय आराधक नहीं।
- सुसमाचार का स्थान परंपरागत रीतियों ने ले लिया।

(3) सुधार आन्दोलन में:

- आराधना विश्वासी के पुरोहितत्व को प्रदर्शित करती थी।
- आराधना लोगों की भाषा में होती थी।
- लूथर केल्विन और प्यूरिटन आराधना में रीति-तिवाज की भूमिका पर असहमत थे।

(4) सुधार के बाद मुक्त कलीसियाओं में:

- प्रचार करना महत्वपूर्ण था।
- मण्डली की भागीदारी महत्वपूर्ण थी।
- सभी आराधनाएँ लोगों की भाषा में होती थीं।

(5) आरंभिक मेथोडिस्ट आराधना की विशेषता थी:

- प्रवचन पर ज़ोर
- नियमित प्रभु भोज पर ज़ोर
- भजन गाना पर ज़ोर
- छोटे समूह पर ज़ोर
- सामूहिक आराधना पर ज़ोर
- सुसमाचार प्रचार पर ज़ोर

(6) आरम्भिक अमेरिका में आराधना:

- व्यक्तिगत सहभागिता और सुसमाचार प्रचार के प्रति उत्साह को बढ़ावा दिया
- कभी-कभी सैद्धांतिक निष्ठा की कीमत पर व्यक्तिगत अनुभव पर ज़ोर दिया जाता था

(7) आज हमारी आराधना परमेश्वर के विषय हमारी धारणाओं और उसके साथ हमारे संबंधों को प्रतिबिम्बित करती है।

पाठ 6 की समीक्षा

(1) हमारी आराधना में संगीत महत्वपूर्ण है

- क्योंकि बाइबल में आराधना में संगीत का विशेष महत्त्व बताया गया है।
- क्योंकि यह विश्वासी के पुरोहितत्व के धार्मिक सिद्धांत को व्यक्त करता है।
- क्योंकि यह कलीसिया की एकता के धार्मिक सिद्धांत को व्यक्त करता है।

(2) संगीत

- संगीत मन से बात करता है। इसलिए हम जो संदेश गाते हैं वह सत्य होना चाहिए।
- संगीत हृदय से बात करता है और भावनाओं को छूता है।
- संगीत शरीर से बात करता है और इसे अपवित्र प्रथाओं के अनुरूप नहीं बनाया जाना चाहिए।
- संगीत इच्छाशक्ति से बात करता है और प्रतिक्रिया की मांग करता है।
- यह पूरे व्यक्ति से बात करता है। जब यह सत्य सिखाता है तो यह मूल्यवान होता है और जब यह झूठी शिक्षा सिखाता है तो यह खतरनाक होता है।

(3) आराधना संगीत के लिए बाइबल आधारित सिद्धांतों में शामिल हैं:

- आराधना के गीत का शब्द-संदेश स्पष्ट रूप से सत्य को प्रकट करना चाहिए।
- आराधना संगीत की शैलियाँ भिन्न हो सकती हैं। पौलुस भजन, स्तुतिगान, और आत्मिक गीत का उल्लेख करता है। अपने आरंभिक दिनों से ही, कलीसिया ने विभिन्न प्रकार के संगीत गाए।
- प्रत्येक शैली प्रत्येक परिस्थिति के लिए उपयुक्त नहीं होती। *हमें पूछना चाहिए, “मेरे सांस्कृतिक संदर्भ में, क्या यह संगीत शैली परमेश्वर की महिमा करती है?”*

(4) संगीत को तीन प्रकार के श्रोताओं से बात करनी चाहिए:

- संगीत को परमेश्वर की स्तुति प्रकट करनी चाहिए
- संगीत को कलीसिया के सामने सत्य को घोषित करना चाहिए
- संगीत को संसार के सामने सुसमाचार को घोषित करना चाहिए

(5) कलीसिया संगीत के सिद्धांतों में शामिल हैं:

- कलीसिया का सबसे महत्वपूर्ण संगीत सामूहिक गायन है
- संगीत को शब्दों के साथ मेल खाना चाहिए

पाठ 7 की समीक्षा

- (1) हम अपनी आराधना के सभी भागों में बाइबल के वचनों को शामिल करके उन्हें आराधना का मुख्य स्थान बना सकते हैं।
- (2) क्योंकि बाइबल आराधना का मुख्य स्थान है, इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इसे स्पष्ट, भावपूर्ण और विविधतापूर्ण ढंग से पढ़ा जाए जिससे पठन ताज़ा रहे।
- (3) क्योंकि प्रचार आराधना का एक अंग है:
 - प्रचार के लिए सावधानीपूर्वक तैयारी की ज़रूरत होती है।
 - प्रचार के लिए मण्डली से प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है।
 - प्रचार करने के लिए प्रचारक की ओर से प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है।
 - प्रचारक को पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थी होना चाहिए।
- (4) प्रार्थना को सार्वजनिक आराधना का एक सार्थक हिस्सा बनाने के व्यावहारिक तरीके:
 - अपने व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन को विकसित करें
 - प्रार्थना करना सीखें
 - बाइबल के वचनों से प्रार्थना करें
 - परमेश्वर के साथ बातचीत करने पर ध्यान केंद्रित करें
 - अपनी प्राथमिकताओं को परमेश्वर की प्राथमिकताओं के साथ मिलाएँ।
 - परमेश्वर से बात करें, मंडली से नहीं।
- (5) क्योंकि दान आराधना का एक भाग है:
 - दान दिया जाना अनुग्रह से उत्प्रेरित हो किसी भय से नहीं।
 - दान दिया जाना प्रेम से उत्प्रेरित हो कुछ पाने की इच्छा से नहीं।
 - दान दिया जाना उदारता से हो कंजूसी से नहीं।
 - दान दिया जाना विनम्रता से हो घमण्ड से नहीं।
 - जिस तरह से हम दान इकट्ठा करते हैं, उससे आराधना की भावना को बढ़ावा मिलना चाहिए।

(6) प्रभु भोज

- मसीह की मृत्यु की ओर देखते हैं
- मसीह की वापसी की प्रतीक्षा करते हैं
- इसे आदरणीय तरीके से किया जाना चाहिए।
- इसे गंभीरता और आनंद दोनों तरह से किया जाना चाहिए।
- इसे ऐसे तरीके से किया जाना चाहिए जो कलीसिया की एकता को दर्शाता हो।

पाठ 8 की समीक्षा

(1) हम आराधना सभा की तैयारी कैसे करते हैं?

- आराधना सभा की तैयारी, परमेश्वर के साथ समय बिताकर आराधना अगुवे की तैयारी से आरम्भ होती है।
- योजना बनाने का एक तरीका आराधना सभा को एक संरचना प्रदान करने में मदद करता है।
- आराधना सभा का एक विषय, एक मुख्य संदेश पहुँचाने में करने में सहायता करता है।
- संतुलन यह सुनिश्चित करता है कि हमारी आराधना, पूरी कलीसिया को संपूर्ण सुसमाचार बताए।
 - संतुलित आराधना परमेश्वर की महिमा और हमारे साथ उसकी उपस्थिति दोनों को दर्शाती है।
 - संतुलित आराधना सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों होती है।
 - संतुलित आराधना में परिचित और नया दोनों शामिल हैं।
- आराधना की योजना में कलीसिया की पूरी अगुआई टीम को शामिल किया जाना चाहिए।
- आराधना की योजना दीर्घकालिक दृष्टिकोण से बनाई जानी चाहिए।
- हम बिना किसी दबाव के योजना बना सकते हैं क्योंकि आराधना हमारे बारे में नहीं है; यह परमेश्वर के बारे में है।

(2) आराधना सभा की अगुआई करने में क्या महत्वपूर्ण है?

- आराधना में सबसे महत्वपूर्ण श्रोता परमेश्वर हैं।
- आराधना सभा में मण्डली, आराधना अगुए और परमेश्वर, सभी एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हैं। अगुए श्रोताओं के लिए आराधना नहीं करते।
- आराधना अगुए को आराधना करनी चाहिए। वह उदाहरण प्रस्तुत करके अगुआई करता है।
- आराधना अगुए को प्रोत्साहित करना चाहिए, किसी की निंदा नहीं।
- आराधना अगुए को अगुआई करनी चाहिए, नियंत्रण नहीं।
- घोषणाएँ इस तरह करनी चाहिए कि आराधना में कोई अनावश्यक बाधा न पड़े।
- आराधना की योजना बनाने के बाद, हमें यह परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए कि वह जिस प्रकार आना चाहे, हमारी सभाओं में प्रवेश करे।

पाठ 9 की समीक्षा

(1) आराधना और संस्कृति

- आराधना शैलियों का मूल्यांकन करते समय, हमें संस्कृति और बाइबल को एक दूसरे से नहीं मिलाना चाहिए।
- जब हमारी संस्कृति बाइबल के विपरीत हो, तो हमें संस्कृति की आशाओं की बजाय बाइबल के आदेशों के अधीन होना चाहिए।
- सुसमाचार को संसार तक पहुँचाने के लिए, हमें यह पूछना चाहिए कि हमारी आराधना हमारी संस्कृति से सबसे प्रभावी ढंग से कैसे जुड़ सकती है।

(2) तीन प्रश्न हमें स्थानीय कलीसिया की आराधना और आसपास की संस्कृति के बीच संबंध को समझने में सहायता करते हैं:

- **यहाँ कौन है?** वह मण्डली को देखता है जो कलीसिया का हिस्सा है।
- **यहाँ कौन था?** कलीसिया की विरासत को देखता है।
- **यहाँ कैसे होना चाहिए?** उस समुदाय पर दृष्टि करता है जिस तक पहुंचने के लिए हमें बुलाया गया है।

(3) क्योंकि संगीत हमारी सांस्कृतिक पहचान का केन्द्र बिन्दु है, इसलिए कलीसियाओं को ऐसा संगीत चुनना चाहिए जो बाइबल के प्रति विश्वासयोग्य और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील हो।

(4) यदि ताली बजाना आराधना का भाग है, तो हमें पूछना चाहिए, “क्या इस गीत के लिए और हमारी आराधना के इस बिंदु पर ताली बजाना उचित है?”

(5) यदि ताली किसी विशेष गीत के प्रत्युत्तर में बजाई जा रही है, तो हमें पूछना चाहिए, “क्या मेरी तालियाँ परमेश्वर की स्तुति से प्रेरित हैं या किसी कलाकार की प्रशंसा से?”

(6) यदि हम बच्चों और युवाओं को वयस्क सभा में रखते हैं, तो हमें ऐसी आराधना की योजना बनानी चाहिए जो सभी उम्र के लोगों को आकर्षित करे।

(7) यदि हम बच्चों और युवाओं के लिए अलग-अलग सभाएँ आयोजित करते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ये सभाएँ आराधना हों, मनोरंजन नहीं।

(8) हमें आराधना में भावनाओं पर न तो ज़्यादा ज़ोर देना चाहिए और न ही उनका इनकार करना चाहिए।

पाठ 10 की समीक्षा

- (1) सामूहिक आराधना रविवार को होती है; आराधना की जीवनशैली दैनिक जीवन में होती है। आराधना के बाइबलीय दृष्टिकोण के लिए दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।
- (2) सच्ची आराधना दर्शाती है कि हम वास्तव में क्या महत्व देते हैं।
- (3) सच्ची आराधना हमारे मूल्यों को बदल देती है।
- (4) आराधना की जीवनशैली का अर्थ है परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन व्यतीत करना। इसका अर्थ है कि परमेश्वर समस्त जीवन का केंद्र बिन्दु होगा।
- (5) आराधना की जीवनशैली का एक बाइबलीय आदर्श रोमियों 12:2 में देखा जा सकता है। इसमें शामिल है:
 - एक नकारात्मक पक्ष: “इस संसार के सदृश न बनो।”
 - एक सकारात्मक पक्ष: “तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए।”